भूमिका

मानव के मन में आदिकाल से विभिन्न प्रकार के प्रश्न उठते हैं, जैसे **“मैं को हूँ”?, “मैं कहाँ था”?, “मेरा लक्ष्य क्या है”?** आदि | इन्हीं जिज्ञासाओं के समाधान स्वरुप दर्शनों का विकास हुआ जिनमें मानव जीवन के चरम उद्देश्य का प्रतिपादन किया गया है | अनेक दार्शनिकों ने अलग-अलग प्रकार से ईश्वर एवं सत्य को समझने का प्रयास किया, फलस्वरूप अनेक दार्शनिक मतों का प्रादुर्भाव हुआ।

भारतीय वांग्मय में दर्शन की अति महत्ता है क्योंकी यह हमें व्यक्ति, समाज व पदार्थों को भिन्न - भिन्न प्रकार से देखने का सामर्थ्य देते हैं| समस्त समष्टी में व्याप्त परम सूक्ष्म तत्व को परिभाषित करते हैं |दर्शनों का अध्ययन हमें भौतिकता और आध्यात्मिकता में भेद बतलाकर इनसे वैराग्य करा-कर मानव से महामानव बना देता है | जैसा हमारा नजरिया होता है वैसा ही हमारी विचारधरा, सिद्धांत,मान्यताएं या धारणाएं बन जाती हैं |अत:दर्शनों का सम्यक बोध सभी मानवों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है|

महर्षि दयानंद जी का कथन है – कि आर्ष शास्त्रों का अध्ययन ऐसा है जितनी डुबकी लगाओ उतने बहुमूल्य रत्न पाओ |

इस **“भारतीय दर्शन का महत्व”** नामक **लघु शोध निबंध में 5 अध्याय हैं,** जिसमें मैंने विभिन्न विषयों का समावेश किया है जैसे -**भारतीय दर्शन, आस्तिक भारतीय दर्शन परिचय, नास्तिक भारतीय दर्शन परिचय, पाश्चात्य दर्शन परिचय, जीवन में दर्शनों का महत्त्व, उपसंहार एवं सन्दर्भ सूची** | इस निबंध में मैंने भारतीय एवं पाश्चत्य दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन दिया है| जीवन के विभिन्न सन्दर्भों में दर्शनों की महत्ता बतलाई है | और भारत की अति प्राचीन महान परंपरा है, इस परंपरा में आने वाले विभिन्न ईश्वर-आत्मा विषयक जो मत हैं, जो उनके सिद्धांत हैं, उनका प्रतिपादन किया गया है ताकि इन दर्शनों का विशेष बोध प्रत्येक व्यक्ति को हो सके|

इस लघु शोध निबंध में मैंने प्रमाणिक शास्त्रों के संदर्भों को दिया है, उन शास्त्रों के लेखकों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ | **शोध ग्रन्थ की निर्देशिका पूज्य साध्वी देवप्रिया जी को उनके मार्ग-दर्शन व निर्देशन के लिए धन्यवाद्** |आशा है लघु शोध निबंध से आपको भारतीय दर्शन का महत्व पता चलेगा |